

## अध्याय ~20

# कहावते/लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति/कहावत का जन्म लोक द्वारा होता है। ये किसी घटना पर आधारित होती हैं। लोकोक्तियाँ एक भाषा-भाषियों की सांस्कृतिक विरासत होती हैं। ये साष्टांगी एवं साभिप्राय होती हैं। इनका मुख्य गुण सजीवता होता है इसलिए ये आम आदमी की ज़बान पर चढ़ी होती हैं। इनके प्रयोग से भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि होती है।



लोकोक्ति का अर्थ है—लोक (संसार) में प्रचलित उक्ति अर्थात् कहावतें। ‘कहावते’ हिन्दी-भाषा का शब्द है। इसका अर्थ होता है ‘कही हुई बातें’। यदि हम इसके अर्थ पर विचार करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक कही हुई बात कहावत नहीं होती, बल्कि जिस कहावत में जीवन के अनुभव का सार-संक्षेपण चमत्कृत ढंग से किया जाए, उसे कहावत के अन्तर्गत माना जाता है।

उदाहरणार्थ रवीश ने कहा, मैं अकेला ही कुआँ खोद लूँगा। इस पर सभी ने रवीश की हँसी उड़ाते हुए कहा, व्यर्थ की बातें करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। यहाँ कहावत का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है “एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता।”

कहावत को ‘सूक्ति’, ‘सुभाषित’ और ‘लोकोक्ति’ भी कहते हैं। इनमें से कहावत शब्द ही उपयुक्त है, क्योंकि सूक्ति या सुभाषित का अर्थ है—सुन्दर उक्ति या बात। लोकोक्ति शब्द इसलिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि लोकोक्ति का अर्थ— “लोक(जनसाधारण) की उक्ति होता है।”

### मुहावरा और कहावत में अन्तर

मुहावरा	कहावत
• मुहावरा एक वाक्यांश होता है।	• कहावत एक वाक्य होता है।
• मुहावरे का स्वतन्त्र रूप में प्रयोग नहीं होता।	• कहावत का स्वतन्त्र रूप में प्रयोग होता है।
• मुहावरे में उद्देश्य, विधेय का बन्धन नहीं होता, लेकिन अर्थ की स्पष्टता के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।	• कहावत में उद्देश्य और विधेय का पूर्ण विधान होता है, इसलिए अर्थ स्वतः स्पष्ट हो जाता है।
• मुहावरे किसी बात को कहने का तरीका अथवा पद्धति है।	• कहावत उस कथन में व्यक्त किए गए विचार अथवा अनुभव का मूल है।
• मुहावरे में काल, वचन तथा पुरुष के अनुरूप परिवर्तन हो जाता है।	• कहावत में उसके रूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।
• मुहावरा का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ व्यक्त करने के लिए होता है।	• कहावत का प्रयोग अन्योक्ति अथवा अप्रस्तुत व्यंजना के लिए होता है।

### हिन्दी की महत्त्वपूर्ण कहावतें/लोकोक्ति व उनके अर्थ

#### (अ)

- अंधों में काना राजा — मूर्खों के मध्य कुछ चतुर।
- अंधे को अंधा कहने से बुरा लगता है — कटु वचन सत्य होने पर भी बुरा लगता है।
- अंधे की लकड़ी — बेसहारे का सहारा।
- अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को दे — स्वार्थी व्यक्ति पक्षपात करता है।
- अंधा सिपाही कानी घोड़ी, विधि ने खूब मिलाई जोड़ी — दोनों साथियों में एक से अवगुण।
- अंधी पीसे कुत्ता खाय — जब कार्य कोई करे उसका फायदा दूसरा व्यक्ति उठाए।
- अंधेर नगरी चौपट राजा — अन्याय का बोलबाला।
- अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग — मनमानी।
- अपनी करनी पार उतरनी — अपने किए का फल भोगना।
- अपनी पगड़ी अपने हाथ — अपने सम्मान को बनाए रखना अपने ही हाथ में है।
- अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता — अपनी चीज को कोई बुरा नहीं बताता।
- अपनी चिलम भरने को मेरा झोंपड़ा जलाते हो — अपने अल्प लाभ के लिए दूसरे की भारी हानि करते हो।
- अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना — पूर्ण स्वतन्त्र होना।
- अपनी टाँग उछारिये आपहि मरिए लाज — अपने घर की बात दूसरों से कहने पर बदनामी होती है।
- अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है — अपने घर में, क्षेत्र में सभी जोर बताते हैं।
- अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष — हममें ही कमजोरी हो तो बताने वालों का क्या दोष।
- अपना हाथ जगन्नाथ — स्वयं का काम स्वयं करना अच्छा होता है।
- अपना रख पराया चख — निजी वस्तु की रक्षा एवं अन्य वस्तु का उपभोग।

- अपने झोंपड़े की खैर मनाओ — अपनी कुशल देखो।
- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत — अवसर निकल जाने के बाद पछताना व्यर्थ होता है।
- अब की अब के साथ, जब की जब के साथ — सदा वर्तमान की ही चिन्ता करनी चाहिए।
- अभी दिल्ली दूर है — अभी कसर है।
- अढ़ाई दिन की बादशाहत — थोड़े दिन की शान-शौकत।
- अधजल गगरी छलकत जाए — कम ज्ञान, धन, सम्मान वाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।
- अक्ल बड़ी या भैंस — शारीरिक बल से बौद्धिक बल अधिक अच्छा होता है।
- अन्त भला तो सब भला — परिणाम अच्छा हो जाए तो सब कुछ अच्छा माना जाता है।
- अटकेगा सो भटकेगा — दुविधा या सोच विचार में पड़ोगे तो काम नहीं होगा।
- अच्छी मति जो चाहो बूढ़े पूछन जाओ — बड़े-बूढ़ों की सलाह से कार्य सिद्ध हो सकते हैं।
- अस्सी की आमद नब्बे खर्च — आय से अधिक खर्च।
- अटका बनिया देय उधार — स्वार्थी और मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।

#### (आ)

- आ पड़ोसन लड़ें — बिना बात झगड़ा करना।
- आ बैल मुझे मार — जानबूझकर आफत मोल लेना
- आम के आम गुठलियों के दाम — दुहरा फायदा।
- आम खाने से काम, पेड़ गिनने से क्या काम — अपने मतलब की बात करो।
- आई तो रोजी नहीं तो रोजा — कमाया तो खाया नहीं तो भूखे।
- आई है जान के साथ जाएगी जनाजे के साथ — आजीवन किसी चीज से पिण्ड न छूटना।
- आई मौज फ़कीर की दिया झोंपड़ा फूँक — मौजी और विरक्त आदमी।
- आँख का अंधा नाम नयनसुख — नाम के विपरीत गुण।
- आँख के अंधे गाँठ के पूरे — मूर्ख किन्तु धनी।
- आगे नाथ न पीछे पगहा — बिल्कुल स्वतन्त्र।
- आगे जाए घुटने टूटे, पीछे देखे आँखें फूटे — जिधर जाएँ उधर ही मुसीबत।
- आदमी पानी का बुलबुला है — मनुष्य जीवन नाशवान है।
- आदमी की दवा आदमी है — मनुष्य ही मनुष्य की सहायता करता है।
- आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास — जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे कार्य के लिए जाता है, किन्तु बुरे कामों में फँस जाता है; तब यह कहावत कही जाती है।
- आटे के साथ घुन भी पिस जाता है — अपराधी की संगति से निरपराध भी दण्ड का भागी बनता है।
- आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिलै न पूरी पावै — अधिक लोभ करने से हानि ही होती है।
- आप न जावै सासुरे औरों को सिख देत — कोई कार्य स्वयं तो न करे पर दूसरों को सीख दे।
- आया है सो जाएगा राजा रंक फकीर — सबको मरना है।
- आसमान पर थूका मुँह पर आता है — बड़े लोगों की निन्दा करने से अपनी ही बदनामी होती है।
- आठ कनौजिये नौ चूल्हे — अलगाव की स्थिति।

#### (इ/ई)

- इधर न उधर, यह बला किधर — अचानक विपत्ति आ जाना।
- इधर कुआँ उधर खाई — हर तरफ़ मुसीबत।
- इतना खाएँ जितना पचे — सीमा के अन्दर कार्य करना चाहिए।
- इस हाथ दे उस हाथ ले — कर्म का फल शीघ्र मिलता है।
- इसके पेट में दाढ़ी है — उम्र कम बुद्धि अधिक।
- इमली के पात पर दण्ड पेलना — सीमित साधनों से बड़ा कार्य करने का प्रयास करना।
- इन तिलों में तेल नहीं — किसी भी लाभ की संभावना न होना।
- ईंट की देवी माँगे का प्रसाद — जैसा व्यक्ति वैसी आवभगत।
- ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया — संसार में कहीं दुःख है कहीं सुख है।

#### (उ/ऊ)

- उसी की जूती उसी का सिर — जिसकी करनी उसी को फल मिलता है।
- उगले तो अंधा, खाए तो कोढ़ी — दुविधा में पड़ना।
- उल्टे बाँस बरेली को — विपरीत कार्य करना।
- ऊँट किस करवट बैठता है — न जाने भविष्य में क्या होगा।
- ऊधौ का लेन न माधौ का देन — किसी से कोई वास्ता न रखना।

#### (ए/ऐ)

- एक अनार सौ बीमार — एक ही वस्तु के अनेक आकांक्षी।
- एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा — दोहरा कटुत्व।
- एक सड़ी मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है — अच्छे समाज को एक बुरा व्यक्ति कलंकित कर देता है।
- एक हाथ से ताली नहीं बजती — झगड़े में दोनों पक्षों की गलती होती है।
- एक पन्थ दो काज/एक ढेले से दो शिकार — एक उपाय से दो कार्यो का होना।
- एक आँख से रोवे, एक आँख से हँसे — दिखावटी रोना।
- एक टकसाल के ढले हैं — सब एक जैसे हैं।
- एक मुँह दो बात — अपनी बात से पलट जाना।
- एक और एक ग्यारह होते हैं — एकता में बल है।
- ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय — बूढ़ा और बेकार आदमी दूसरे पर बोझ हो जाता है।

#### (ओ/औ)

- ओखली में सर दिया तो मूसलों से क्या डरना — जब कार्य करना ही है तो आने वाली कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए।
- ओछे की प्रीति बालू की भीति — दुष्ट व्यक्तियों की मित्रता क्षणिक होती है।
- ओस चाटे प्यास नहीं बुझती — बहुत कम वस्तु से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती।

#### (क)

- कोयला होय न उजला सौ मन साबुन धोय — दुष्ट व्यक्ति की प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं होता उसे चाहे कितनी ही सीख दी जाए।
- कोयले की दलाली में हाथ काले — बुरी संगति का परिणाम बुरा होता है।
- कुत्ते भौंकते रहते हैं और हाथी चलता जाता है — महान् व्यक्ति छोटी-सी नुक्ता-चीनी पर ध्यान नहीं देता है।
- कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है — सफ़ाई सबको पसन्द होती है।
- काम का ना काज का दुश्मन अनाज का — निकम्मा व्यक्ति।

- काम को काम सिखाता है — काम करते-करते आदमी होशियार हो जाता है।
- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली — अत्यधिक अन्तर।
- काठ की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती — अन्याय बार-बार नहीं चलता।
- कर सेवा खा मेवा — अच्छे कार्य का फल अच्छा मिलता है।
- कभी घना-घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी मना — जो मिले उसी में सन्तुष्ट रहना चाहिए।
- कब्र में पाँव लटकाए बैठा है — मरने वाला है।
- कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता — ऊपरी वेशभूषा से किसी के अवगुण नहीं छिप जाते।
- कोठी वाला रोवे छप्पर वाला सोवै — अधिक धन चिन्ता का कारण होता है।
- कहे खेत की, सुने खलिहान की — कहा कुछ गया और समझा कुछ गया।
- कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता — हठी पुरुष समझाने से दूसरों का कहना नहीं मानता।
- कोऊ नृप होय हमें का हानी — किसी के पद, धन या अधिकार मिलने से हम पर कोई प्रभाव नहीं होता।
- कौआ चला हंस की चाल — दूसरों की नकल पर चलने से असलियत नहीं छिपती तथा हानि उठानी पड़ती है।
- कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही लगती है — लाभ जहाँ से होता है, वहीं खर्च हो जाता है।
- कुंजड़ा अपने बेरों को खट्टा नहीं बताता — कोई अपने माल को खराब नहीं कहता।
- किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान — स्वाभिमान की रक्षा नौकरी में नहीं हो सकती।
- कखरी लरका गाँव गोहार — वस्तु के पास होने पर दूर-दूर उसकी तलाश करना।
- काला अक्षर भैंस बराबर — निरक्षर व्यक्ति।
- कानी के ब्याह को सौ जोखो — पग-पग पर बाधाएँ।

## (ख)

- खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है — एक को देखकर दूसरे में परिवर्तन आता है।
- खुदा की लाठी में आवाज़ नहीं होती — कोई नहीं जानता कि भगवान कब, कैसे, क्यों दण्ड देता है।
- खुदा गंजे को नाखून नहीं देता — अयोग्य को अधिकार नहीं मिलता।
- खेत खाए गदहा, मारा जाए जुलाहा — जब किसी व्यक्ति के अपराध पर किसी अन्य को दण्ड मिलना।
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया — अधिक कार्य का अत्यल्प फल।
- खाक डाले चाँद नहीं छिपता — अच्छे आदमी की निंदा करने से कुछ नहीं बिगड़ता।
- खग ही जाने खग की भाषा — सब अपने-अपने सम्पर्क के लोगों का हाल समझते हैं।
- खरी मजूरी चोखा काम — पूरी मजदूरी देने पर ही काम अच्छा होता है।
- खुशामद से ही आमद है — खुशामद से ही धन आता है।
- खूँटे के बल बछड़ा कूदे — किसी की शह पाकर ही आदमी अकड़ दिखाता है।

## (ग)

- गुड़ खाए गुलगुलों से परहेज — बनावटी त्याग।
- गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास — जो व्यक्ति सामने आए उसकी प्रशंसा करना/सिद्धांतहीन/अवसरवादी व्यक्ति

- गंगा का आना हुआ और भागीरथ को यश — काम तो होना ही था, यश किसी को मिल गया।
- गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त — जिसका काम है वो आलस्य में रहे और दूसरे फुर्ती दिखाएँ।
- गोदी में बैठकर दाढ़ी नोचे — भला करने वाले के साथ दुष्टता करना।
- गधा धोने से बछड़ा नहीं हो जाता है — किसी भी उपाय से स्वभाव नहीं बदलता।
- गीदड़ की शामत आए तो गाँव की ओर भागे — विपत्ति में बुद्धि काम नहीं करती।
- गरजै सो बरसै नहीं — डींग हाँकने वाले काम नहीं करते।

## (घ)

- घर का भेदी लंका ढावे — घर का रहस्य जानने वाला बड़ा घातक होता है।
- घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते — घर में आने वाले का सत्कार करना चाहिए।
- घर की मुर्गी दाल बराबर — अपने घर के गुणी व्यक्ति का सम्मान न करना।
- घर खीर तो बाहर भी खीर — सम्पन्नता में सर्वत्र प्रतिष्ठा मिलती है।
- घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या — व्यापार में रिश्तेदारी नहीं निभाई जाती।
- घोड़ों को घर कितनी दूर — पुरुषार्थी के लिए सफलता सरल है।
- घोड़े को लात, आदमी को बात — दुष्ट से कठोरता का और सज्जन से नम्रता का व्यवहार करें।
- घायल की गति घायल जाने — जो कष्ट भोगता है वही दूसरे के कष्ट को समझ सकता है।

## (च, छ)

- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय — बहुत कंजूस होना।
- चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात — अल्प समय के लिए लाभ।
- चोर की दाढ़ी में तिनका — अपराधी सदा सशक्त रहता है।
- चोर-चोर मौसरे भाई — एक पेशे वाले आपस में नाता जोड़ लेते हैं।
- चोर के पैर नहीं होते — अपराधी अशक्त होता है।
- चोरी और सीना जोरी — दोषी भी हो घुड़की भी दे।
- चोरी का माल मोरी में — गलत ढंग से कमाया धन ऐसे ही बर्बाद होता है।
- चूहों की मौत बिल्ली का खेल — किसी को कष्ट देकर मौज करना।
- चूहे का बच्चा बिल खोदता है — जाति स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता।
- चींटी की मौत आती है तो पर निकलते हैं — घमण्ड विनाश का कारण है।
- चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता — निर्लज्ज पर उपदेशों का असर नहीं पड़ता।
- चिराग में बत्ती और आँख में पट्टी — शाम होते ही सोने लगना।
- चुपड़ी और दो-दो — अच्छी चीज और वह भी बहुतायत में।
- छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल — किसी व्यक्ति को ऐसी वस्तु की प्राप्ति हो, जिसके लिए वह सर्वथा अयोग्य हो।
- छोटा मुँह बड़ी बात — छोटे लोगों का बढ़-चढ़कर बोलना।

## (ज)

- जान बची लाखों पाए — किसी झंझट से मुक्ति।
- जान मारे बनिया पहचान मारे चोर — बनिया और चोर जान पहचान वाले को ही ज़्यादा ठगते हैं।
- जान है तो जहान है — जीवन ही सब कुछ है।
- जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ — दोनों एक समान।

- जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे परदेश — निकम्मा आदमी घर में हो या बाहर कोई अन्तर नहीं।
- जैसा करोगे वैसा भरोगे — अपनी करनी का फल मिलता है।
- जैसा मुँह वैसा थप्पड़ — जो जिसके योग्य हो उसे वही मिलता है।
- जैसा देश वैसा भेष — किसी स्थान का पहनावा, उस क्षेत्र विशेष के अनुरूप होता है।
- जल में रहकर मगर से बैर — बड़ों से शत्रुता नहीं चलती।
- जब तक साँस तब तक आस — आशा जीवनपर्यन्त बनी रहती है।
- जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि — कवि की कल्पना अनन्त होती है।
- जहाँ जाय भूखा वहाँ पड़े सूखा — दुःखी कहीं भी आराम नहीं पा सकता।
- जहाँ मुर्गा नहीं होता क्या सवेरा नहीं होता — किसी एक की वजह से संसार का काम नहीं रुकता।
- जिसका खाइये उसका गाइये — जिससे लाभ हो उसी का पक्ष लें।
- जिसका काम उसी को साजै — जो काम जिसका है वही उसे ठीक तरह से कर सकता है।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस — जबर्दस्त का बोल-बाला।
- जितने मुँह उतनी बातें — एक ही बात पर भिन्न-भिन्न कथन।
- जितना गुड़ डालो, उतना ही मीठा — जितना खर्च करोगे वस्तु उतनी ही अच्छी मिलेगी।
- जितनी चादर देखो उतने पैर पसारो — अपनी आमदनी के हिसाब से खर्च करो।
- जिस थाली में खाना उसी में छेद करना — जो उपकार करे उसका अहित करना।
- जाकै पैर न फटे बिवाई वह क्या जाने पीर पराई — स्वयं दुःख भोगे बिना दूसरे के दर्द का एहसास नहीं होता।
- जाय लाख रहे साख — इज्जत रहनी चाहिए व्यय कुछ भी हो जाए।
- जिन ढूँढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ — जो संकल्पशील होते हैं, वे कठिन परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।
- जस दूल्हा तस बनी बरात — जैसा मुखिया वैसे ही अन्य साथी।
- जीभ जली और स्वाद भी कुछ न आया — बदनामी भी हुई और लाभ भी नहीं मिला।
- जड़ काटते जाना और पानी देते रहना — ऊपर से प्रेम दिखाना, अप्रत्यक्ष में हानि पहुँचाते रहना।
- ज्यों-ज्यों भीजे कामरी त्यों-त्यों भारी होय — जैसे-जैसे समय बीतता है जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं।

### (झ, ट, ठ, ड, ढ)

- झूठ के पाँव नहीं होते — झूठ बोलने वाला एक बात पर नहीं टिकता।
- झोपड़ी में रह, महलों का ख्वाब देखें — सामर्थ्य से बढ़कर चाह रखना।
- टके की मुर्गी नौ टके महसूल — कम कीमती वस्तु अधिक मूल्य पर देना।
- टके का सब खेल — धन-दौलत से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं।
- ठोक बजा ले चीज, ठोक बजा दे दाम — अच्छी वस्तु का अच्छा मूल्य।
- ठोकर लगे तब आँख खुले — कुछ गँवाकर ही अक्ल आती है।
- डण्डा सबका पीर — सख्ती करने से लोग नियंत्रित होते हैं।
- डायन को दामाद प्यारा — अपना सबको प्यारा होता है।
- ढाक के तीन पात — सदैव एक-सी स्थिति में रहने वाला।
- ढोल के भीतर पोल/ढोल में पोल — केवल ऊपरी दिखावा।

### (त, थ)

- तलवार का घाव भरता है, पर बात का घाव नहीं भरता — मर्मभेदी बात आजीवन नहीं भूलती।
- तेली का तेल जले, मशालची का दिल जले — जब कोई व्यक्ति किसी की सहायता करता है, तो जलन अन्य व्यक्ति को होती है।
- तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राह बटोही होवे जैसा — बिना स्त्री के पुरुष का कोई ठिकाना नहीं।
- तू डाल-डाल, मैं पात-पात — एक से बढ़कर दूसरा चालाक।
- तख्त या तख्ता — शान से रहना या भूखो मरना।
- तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर — तुम्हारी बात सच हो।
- तेल देखो तेल की धार देखो — सावधानी और धैर्य से काम लो।
- थूक से सत्तू सानना — कम सामग्री से काम पूरा करना।
- थोथा चना बाजे घना — अकर्मण्य अधिक बात करता है।
- थोड़ी पूँजी धणी को खाय — अपर्याप्त पूँजी से व्यापार में घाटा होता है।

### (द, ध)

- दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम — अस्थिर विचार वाला व्यक्ति कुछ भी नहीं कर पाता है।
- दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है — ठोकर खाने के बाद आदमी सावधान हो जाता है।
- दूध पिलाकर साँप पोसना — शत्रु का उपकार करना।
- दुधारू गाय की लात सहनी पड़ती है — जिससे कुछ पाना होता है, उसकी धौंस डपट सहन करनी पड़ती है।
- दूर के ढोल सुहावने — दूर से ही कुछ चीजें अच्छी लगती हैं।
- दाल भात में मूसलचन्द — दो के बीच अनावश्यक व्यक्ति का हस्तक्षेप करना।
- दाने-दाने पर मुहर — हर व्यक्ति का अपना भाग्य।
- दाम सँवारे काम — पैसा सब काम करता है।
- दूसरे की पतल लम्बा-लम्बा भात — दूसरे की वस्तु अच्छी लगती है।
- दोनों दीन से गए पाण्डे हलुआ मिला न माँडे — किसी तरफ के न होना।
- दो मुल्लों में मुर्गी हलाल — दो को दिया काम बिगड़ जाता है।
- धन्ना सेठ के नाती बने हैं — अपने को अमीर समझते हैं।
- धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं — सांसारिक अनुभव बहुत हैं।

### (न)

- नंगा क्या नहायेगा, क्या निचोड़ेगा — जिसके पास कुछ है ही नहीं, वह क्या अपने पर खर्च करेगा और क्या दूसरों पर।
- न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी — काम न करने के उद्देश्य से असम्भव बहाने बनाना/ऐसी शर्त पर काम स्वीकार करना जो पूरी न हो सके।
- नाच न आवे आँगन टेढ़ा — जब कोई व्यक्ति दूसरों के दोष निकालकर अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयास करता है।
- नीम न मीठा होय सींचो गुड़ घी-से — बुरे लोगों का स्वभाव नहीं बदलता, प्रयास चाहे जैसा किया जाए।
- नाक दबाने से मुँह खुलता है — कठोरता से कार्य सिद्ध होता है।
- नक्कारखाने में तूती की आवाज — बड़ों के बीच में छोटे आदमी की कौन सुनता है।

- नदी नाव संयोग — कभी-कभी मिलना।
- नकटा बूचा सबसे ऊँचा — निर्लज्ज आदमी सबसे बड़ा है।
- नेकी कर और कुएँ में डाल — भलाई का काम करके फल की आशा मत करो।
- नौ नकद, न तेरह उधार — नकद का काम उधार के काम से अच्छा है।
- नया नौ दिन पुराना सौ दिन — पुरानी चीजें ज्यादा दिन चलती हैं।

## (प)

- पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं — सभी के गुण समान नहीं होते, उनमें कुछ न कुछ अन्तर होता है।
- पाँचों सवारों में मिलना — अपने को बड़े व्यक्तियों में गिनना।
- पत्नी टटोले गठरी और माँ टटोले अंतड़ी — पत्नी देखती है कि मेरे पति के पास कितना धन है और माँ देखती है कि मेरे बेटे का पेट अच्छी तरह भरा है या नहीं।
- पढ़े फ़ारसी बेचे तेल यह देखो कुदरत का खेल — योग्यतानुसार कार्य न मिलना।
- पराधीन सपनेहुँ सुख नहीं — पराधीनता सदैव दुःखदायी होती है।
- पराये धन पर लक्ष्मी नारायण — दूसरे के धन पर गुलछरें उड़ाना।
- पानी पीकर जात पूछते हो — काम करने के बाद उसके अच्छे-बुरे पहलुओं पर विचार करना।

## (फ, ब)

- फ़कीर की सूरत ही सवाल है — फ़कीर कुछ माँगे या न माँगे, यदि सामने आ जाए तो समझ लेना चाहिए कि कुछ माँगने ही आया।
- फलेगा सो झड़ेगा — उन्नति के पश्चात् अवनति अवश्यम्भावी है।
- बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद — जब कोई व्यक्ति ज्ञान के अभाव में किसी वस्तु की कद्र नहीं करता है।
- बनिया मीत न वेश्या सती — बनिया किसी का मित्र नहीं होता और वेश्या चरित्रवान नहीं होती।
- बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय — जो कुछ हो चुका है उसे भूलकर भविष्य के लिए संभल जाना चाहिए।
- बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते होय — बुरे कर्मों का परिणाम अच्छा नहीं हो सकता।

## (भ, म)

- भीगी बिल्ली बताना — बहाना बनाना।
- भूल गए राग रंग, भूल गए छकड़ी, तीन चीज याद रहें नून तेल लकड़ी — जब कोई स्वतन्त्र प्रकृति का व्यक्ति बुरी तरह से गृहस्थी के चक्कर में पड़ जाता है।
- भैंस के आगे बीन बजे, भैंस खड़ी पगुराय — मूर्ख अच्छी वस्तु की कद्र नहीं करते, मूर्खों को उपदेश देना व्यर्थ है।

- मन चंगा तो कठौती में गंगा — यदि मन शुद्ध है तो तीर्थाटन आवश्यक नहीं है।
- मान न मान मैं तेरा मेहमान — जबर्दस्ती गले पड़ना।
- मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक — सीमित क्षेत्र तक पहुँच।
- मेरी ही बिल्ली और मुझसे म्याऊँ — आश्रयदाता को ही राँब दिखाना।

## (य, र, ल, व)

- यह मुँह और मसूर की दाल — जब कोई व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक पाने की अभिलाषा करता है तब यह कहावत चरितार्थ होती है।
- रस्सी जल गई पर ऐंठन नहीं गई — स्वाभिमानी व्यक्ति बुरी अवस्था को प्राप्त होने पर भी अपनी शान नहीं छोड़ता है।
- राम नाम जपना, पराया माल अपना — ऊपर से भक्त, भीतर से ठग होना।
- लकड़ी के बल बन्दर नाचे — दुष्ट लोग भय से ही काम करते हैं।
- वही मन, वही चालीस सेर — बात एक ही है, दोनों बातों में कोई अन्त नहीं।

## (श, स, ह)

- शक्ल चुड़ैल की, मिजाज परियों का — बेकार का नखरा।
- शेखी सेठ की, धोती भाड़े की — कुछ न होने पर भी बड़प्पन दिखाना।
- सब धान बाइस पंसेरी — अच्छे-बुरे को एक समान समझना।
- सीधी उँगली से घी नहीं निकलता — हमेशा सीधेपन से कार्य नहीं होता है।
- सूरदास खल काली कामरि चढ़े न दूजौ रंग — दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता।
- सौ सुनार की एक लुहार की — निर्बल की सौ चोटों की अपेक्षा बलवान की एक चोट काफी होती है।
- सहज पके सो मीठा होय — ठीक समय लेकर किया गया कार्य अच्छा होता है।
- समय चूकि पुनि का पछिताने — अवसर चले जाने पर पछिताने का कोई लाभ नहीं होता।
- सावन हरे न भादो सूखा — सदा एक-सा रहना।
- हाथ कंगन को आरसी क्या — प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता।
- होनहार बिरवान के होत चीकने पात — बचपन से ही अच्छे लक्षणों का दिखाई देना।
- हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और होते हैं — कथनी और करनी में अंतर।
- हथेली पर सरसों नहीं उगती — कोई भी कार्य बिना एक प्रक्रिया और समय के पूर्ण नहीं होता।



# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. कहावत को कहते हैं  
(a) लोकोक्ति, (सूक्ति, सुभाषित), कही हुई बातें  
(b) बढ़ा-चढ़ा कर कहना  
(c) छोटे से वाक्यांश में कुछ कहना  
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं
2. 'एक अनार सौ बीमार' कहावत का अर्थ है (UP SI पुलिस परीक्षा 2017)  
(a) अत्यन्त कम (b) हर हाल में मुसीबत  
(c) एक ही वस्तु के अनेक आकांक्षी (d) दुहरा फायदा
3. 'जल में रहकर मगर से बैर' कहावत का अर्थ है  
(a) अपराधी हमेशा शक्ति रहता है (b) बड़ों से शत्रुता नहीं चलती  
(c) मगरमच्छ से दुश्मनी (d) जल में मगर के साथ रहना
4. 'जस दूल्हा तस बनी बारात' कहावत का अर्थ है  
(a) जिससे लाभ हो उसी का पक्ष लें  
(b) जो जिसके योग्य हो उसे वही मिलता है  
(c) लालच में कोई काम करना  
(d) जैसा मुखिया वैसे ही अन्य साथी
5. 'नाच न आवे आँगन टेढ़ा' कहावत का अर्थ है  
(a) बुरे लोगों का स्वभाव नहीं बदलता  
(b) नाचने का मन नहीं होना  
(c) अपने दोष (अयोग्यता) को छिपाने के लिए दूसरों के दोष निकालना  
(d) सीधे आँगन में नाचने की इच्छा
6. 'दूध का दूध पानी का पानी' कहावत का अर्थ है  
(a) दूध में पानी मिला होना (b) असम्भव कार्य हो जाना  
(c) दो को दिया काम बिगड़ जाता है (d) ठीक-ठाक न्याय हो जाना
7. 'दूर के ढोल सुहावने' कहावत का अर्थ है  
(a) ढोल को दूर रखना (b) ढोल को अपने पास से हटा देना  
(c) दूर की वस्तु अच्छी लगना (d) ढोल के बारे में दूर की सोचना
8. 'पढ़े फ़ारसी बेचे तेल यह देखो कुदरत का खेल' कहावत का अर्थ है।  
(a) फ़ारसी पढ़े-लिखे तेल बेचते हैं  
(b) कुदरत के खेल में फ़ारसी तेल बेचते हैं  
(c) योग्यतानुसार कार्य न मिलना  
(d) सभी के गुण समान नहीं होते
9. बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय लोकोक्ति का अर्थ है  
(UPSI पुलिस परीक्षा 2017, UP VDO/समाज कल्याण पर्यवेक्षक 2018)  
(a) बबूल का पेड़ आम के पेड़ जैसा होता है  
(b) बबूल का पेड़ आम के पेड़ से अच्छा होता है  
(c) बुरे कर्मों की अपेक्षा कलंकित होना अधिक बुरा है  
(d) बुरे कर्मों का परिणाम, अच्छा नहीं हो सकता
10. 'यह मुँह और मसूर की दाल' कहावत का अर्थ है  
(a) मसूर की दाल का महँगा होना  
(b) मूर्ख अच्छी वस्तु की कद्र नहीं करते  
(c) अपने को बड़े व्यक्तियों में गिनना  
(d) अपनी योग्यता से अधिक पाने की उम्मीद
11. 'छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल' का अर्थ है (UPTET 2020, NVS प्रवक्ता परीक्षा 2014)  
(a) मिथ्या आडम्बर  
(b) अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज देना  
(c) योग्य व्यक्ति को अच्छी चीज देना  
(d) अधिक पाने का लालच करना
12. 'घाट-घाट का पानी पीना' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है (UPTET 2020)  
(a) अनेक क्षेत्रों का अनुभव  
(b) जीवन में स्थिरता का अभाव  
(c) दर-दर भटकना  
(d) परोपकार के लिए यहाँ-वहाँ घूमना
13. 'भई गति साँप छछूँदर केरी' (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2019)  
(a) शिकार की स्थिति (b) आक्रामक स्थिति  
(c) हास्यास्पद स्थिति (d) असमंजस की स्थिति
14. 'कठोर परिश्रम के बिना जीवन में सफलता नहीं मिलती' इस सन्देश की व्यंजक उक्ति इनमें से है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)  
(a) बालू से तेल निकालना  
(b) खोदा पहाड़ निकली चुहिया  
(c) जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ  
(d) नौ दिन चले अढ़ाई कोस
15. 'विपत्ति के समय थोड़ी-सी सहायता भी बहुत बड़ी होती है' इस भाव की व्यंजक पंक्ति है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)  
(a) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात  
(b) आम के आम गुठलियों के दाम  
(c) चुपड़ी और दो-दो  
(d) डूबते को तिनके का सहारा
16. 'आँधी आवे बैठ गँवाने' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)  
(a) संकट से मुँह फेरना  
(b) विपरीत परिस्थिति में उपयुक्त समय आने का इंतजार करना  
(c) विपत्ति से टकराने का हौसला रखना  
(d) आँधी के बाद पानी बरसने का इंतजार करना
17. 'एक दिन का पाहुना, दूजे दिन अनखावना' (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)  
(a) दामाद को ससुराल में अधिक दिन नहीं रहना चाहिए  
(b) मेहमान थोड़े ही समय में शैतान बन जाता है  
(c) अतिथि ज्यादा दिन नहीं रहता  
(d) अतिथि को कम समय में ही चले जाना चाहिए
18. 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' का अर्थ है (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)  
(a) अपने से बड़ों पर क्रोध करना  
(b) कायरतापूर्ण व्यवहार करना  
(c) किसी बात पर शर्मिन्दा होकर क्रोध करना  
(d) अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ झुँझलाना

19. 'काठ की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती' का अर्थ है  
(UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)

- (a) दुर्भाग्य की मार बार-बार नहीं होती
- (b) बुरे दिन हमेशा नहीं रहते
- (c) छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता
- (d) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है

20. 'देशी मुर्गी विलायती बोल' कहावत/लोकोक्ति का सही अर्थ दिए गए विकल्पों में से चुनिए  
(KVS PRT 2015)

- (a) कम कीमत में अच्छी वस्तु
- (b) उम्मीद से बढ़कर
- (c) बेमेल बातों का मेल
- (d) अनोखी चीज देखना

21. 'अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग' लोकोक्ति का अर्थ है।  
(उत्तराखण्ड 'समूह-घ' परीक्षा 2019)

- (a) सबका अपना मत
- (b) अपना कार्य निष्ठा से करना
- (c) दूसरे का कार्य निष्ठा से करना
- (d) गाकर नृत्य करना

22. 'न सावन सूखे न भादो हरे' कहावत का अर्थ है

- (a) सदैव एक ही मानसिक स्थिति में होना
- (b) सदैव सुखी रहना
- (c) सदैव प्रसन्न रहना
- (d) सुख-दुःख का भेद न जानना

23. 'एक तो करेला, दूजे नीम चढ़ा' लोकोक्ति का अर्थ है  
(CGPSC Pre 2019, KVS/PRT 2015)

- (a) करेले की बेल नीम पर चढ़ाई जाती है
- (b) करेले और नीम पास-पास उगते हैं
- (c) गुणी की अच्छी संगत में पड़कर और गुणवान हो जाना
- (d) बुरे का बुरी संगत में पड़कर और बुरा हो जाना

24. 'जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ' लोकोक्ति का अर्थ है  
(CGPSC 2017)

- (a) परिश्रम का फल गहरे पानी में मिलता है
- (b) परिश्रम का फल अवश्य मिलता है
- (c) परिश्रम का फल कभी-कभी मिलता है
- (d) परिश्रम का फल भाग्य से मिलता है

25. 'नीम हकीम खतरे जान' लोकोक्ति का अर्थ है  
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

- (a) नीम का पत्ता चबाना
- (b) नीम से हकीमी करना
- (c) खतरनाक चीज
- (d) अल्प-ज्ञान भयंकर

26. 'तन पर नहीं लत्ता, पान खाए अलबत्ता' लोकोक्ति का अर्थ है

- (a) बहुत गरीब होना
- (b) व्यर्थ का प्रदर्शन
- (c) एक साथ दो लाभ
- (d) बुरी आदत का शिकार

27. 'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' लोकोक्ति का अर्थ है  
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

- (a) दोनों विद्वान्
- (b) दोनों मूर्ख
- (c) दोनों तत्वज्ञ
- (d) दोनों चालाक

28. 'आँख के अंधे गाँठ के पूरे' लोकोक्ति का सही अर्थ है (CGPSC Pre 2017)

- (a) गुण के विरुद्ध नाम का होना
- (b) किसी तरह की जिम्मेदारी का न होना
- (c) मूर्ख धनवान
- (d) डींग हाँकना

29. तुलसीदास का कथन 'ढोल गँवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' किस लोकोक्ति का समर्थन करता है?

(अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

- (a) आमी, नीबू, बनिया। चापें तें रस देय
- (b) बाँमन कुकुर, नाऊ। आप जाति देखि गुर्जर
- (c) ऊँचजाति बतिअवले। नीचजाति लतिअवले
- (d) तीन कनौजिया तेरह चूल्हा

30. 'ऊँट के मुँह में जीरा' लोकोक्ति का अर्थ है  
(UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015/TGT परीक्षा 2014)

- (a) बहुत बड़े प्राणी को भोजन बनाना
- (b) बहुत अधिक खाने वाले को बहुत कम देना
- (c) जानवर को दवाई देना
- (d) बड़े प्राणी को सांत्वना देना

निर्देश (प्र. सं. 31-32) निम्नलिखित लोकोक्तियों के लिए उपयुक्त विकल्प चुनिए।

31. 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' लोकोक्ति का अर्थ है

- (a) बुद्धि से विनाश नहीं होता
- (b) हमेशा बुद्धि से कार्य करना चाहिए
- (c) विपरीत बुद्धि सही नहीं होती
- (d) प्रतिकूल समय पर बुद्धि भी विपरीत हो जाती है

32. 'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद' (UP वन विभाग 2015)

- (a) बन्दर के लिए अदरक विष है
- (b) बन्दर को ख़ाँसी-जुकाम नहीं होता
- (c) मूर्ख अच्छी वस्तु की कद्र नहीं करता
- (d) बन्दर को अदरक पसन्द नहीं

33. 'आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' -लोकोक्ति का सही अर्थ है।

- (a) साधुओं की संगति छोड़ देना
- (b) वांछित कार्य को छोड़कर अन्य कार्य में लग जाना
- (c) भक्ति छोड़कर व्यापार करने लगना
- (d) गृहस्थी के झंझटों में फँस जाना

34. लोकोक्ति और उसके अभिप्राय का कौन-सा जोड़ा गलत है?

(UPTET 2018)

- (a) ओस चाटे प्यास नहीं बुझती - बड़े काम के लिए विशेष प्रयत्न की जरूरत होती है
- (b) कढ़ाही से गिरा, चूल्हे में पड़ा - एक आपत्ति से छूटकर दूसरी विपत्ति में पड़ना
- (c) घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो - इतना खर्च करो कि इज्जत बनी रहे
- (d) काठ की हाँडी बार-बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती - काठ की हाँडी बार-बार जल जाती है

35. निम्नलिखित में लोकोक्ति कौन सी है? (UPTET 2013)

- (a) आसमान पर थूकना
- (b) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
- (c) गूलर का फूल होना
- (d) कोढ़ में खाज होना

36. स्थिति में परिवर्तन न होने के भाव को व्यक्त करने वाली सही कहावत है (UPTET 2016)

- (a) जस दूल्हा तस बनी बारात
- (b) न सुख में मोटे न दुःख में दुबले
- (c) न गरजे न बरसे वही धूप की धूप
- (d) वही ढाक के तीन पात

37. 'हाथ कंगन को आरसी क्या' का सही अर्थ है? (KVS PRT 2015)

- (a) गुणी को आडम्बर की जरूरत नहीं
- (b) धनी के लिए पैसे का महत्त्व नहीं
- (c) प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं
- (d) बलवान को सहयोगी की जरूरत नहीं

38. पत्थर को जोंक नहीं लगती (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)

- (a) मजबूत चीज आसानी से खराब नहीं होती
- (b) दो धूर्तों में प्रायः टकराव नहीं होता
- (c) हठी पर कोई प्रभाव नहीं होता
- (d) सबल का शोषण नहीं होता

39. 'हृदय पवित्र तो सब कुछ ठीक' के अर्थ में लोकोक्ति है

(UPSSSC 2016)

- (a) मान न मान मैं तेरा मेहमान (b) मार-मार कर हकीम बनाना  
(c) पराए धन पर लक्ष्मीनारायन (d) मन चंगा तो कठौती में गंगा

40. 'एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी' लोकोक्ति का तात्पर्य है

(UKSSSC VDO 2015)

- (a) तवे की रोटी (b) सभी एक-समान  
(c) सभी श्रेष्ठ (d) रोटी के प्रकार

41. 'खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है' -लोकोक्ति का अर्थ है

(UKPCS 2012)

- (a) संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है  
(b) प्रयत्न ज्यादा पर लाभ थोड़ा  
(c) कपटपूर्ण व्यवहार  
(d) किए का फल भोगना पड़ेगा

42. 'पगड़ी रख, घी चख' लोकोक्ति का अर्थ है

(UPPSC Pre 2018)

- (a) मान-सम्मान से ही जीवन का आनन्द है  
(b) पढ़-लिखकर भी अनुभवहीन  
(c) निर्लज्ज होकर कुछ पाना  
(d) बदनामी से बुरा नेकनामी

43. 'हृदय सम्राट' लोकोक्ति का अर्थ है

(CGPSC Pre 2017)

- (a) मनमौजी व्यक्ति (b) शक्तिशाली व्यक्ति  
(c) उदार हृदय वाला व्यक्ति (d) अत्यन्त प्रिय

44. 'अर्शफियाँ लुटें : कोयलों पर मुहर' इस कहावत का अर्थ क्या है?

(अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

- (a) मूल्यवान वस्तु की अपेक्षा तुच्छ वस्तु का ध्यान  
(b) छोटी वस्तु की सुरक्षा में अधिक व्यय  
(c) सम्पूर्ण लाभ स्वयं उठाना  
(d) आय से अधिक व्यय

45. 'कार्य करने के बाद उसके बारे में जाँच करना' का अर्थ वाली कहावत है

(HTET 2013)

- (a) साँप निकलने पर लकीर पीटते रहना  
(b) पानी पीकर जाति पूछना  
(c) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत  
(d) उपर्युक्त सभी

46. 'कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर' लोकोक्ति का सही आशय है

(UPSDI 2006)

- (a) संघर्ष होना  
(b) एक दूसरे की सहायता करना  
(c) भलाई करना  
(d) एक-से स्वभाव वाले होना

47. 'एक हाथ से ताली नहीं बजती' लोकोक्ति का अभिप्राय है

(UPSDI 2006)

- (a) शत्रुता दोनों पक्षों की गलती से होती है  
(b) संघर्ष बराबरी वाले दो पक्षों में होना चाहिए  
(c) एक आदमी से काम नहीं चलता  
(d) सराहना हेतु दोनों ने ताली बजाई

48. 'जितने मुँह उतनी बातें' का अर्थ है

- (a) बहुत ज्यादा बातूनी होना  
(b) झूठ बोलना  
(c) एक ही बात पर अनेक कथन  
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

49. 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' का भाव है

- (a) काम न करने का बहाना बनाना  
(b) खूब काम करना  
(c) काम से दिल ऊबना  
(d) काम में आलस्य करना (न पूरी होने वाली शर्त)

50. 'आठ कनौजिया नौ चूल्हे' लोकोक्ति का अर्थ क्या होता है?

(UPSSSC सहायक लेखाकार परीक्षा 2015)

- (a) मस्त रहना (b) फाँका करना  
(c) अलगाव की स्थिति (d) सम्पन्नता की स्थिति

51. 'खुदा गंजे को नाखून न दे' लोकोक्ति का अभिप्राय है (UPSDI 2006)

- (a) छोटे आदमी का प्रेम अस्थिर होता है  
(b) लज्जित होकर दूसरे पर क्रोध न निकाले  
(c) एक दोष पहिले से था, दूसरा और आ गया  
(d) अत्याचारी को शक्ति नहीं मिलनी चाहिए

52. 'समय के अनुसार काम करना चाहिए' अर्थ की बोधक लोकोक्ति है

(UPNT 2006)

- (a) जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै  
(b) जाके पांव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई  
(c) ऊँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना  
(d) का बरसा जब कृषि सुखाने

53. 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' से तात्पर्य है

(UPTGT 2010)

- (a) नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना  
(b) धीरे-धीरे चलना (बहुत सुस्त होना)  
(c) चलने की कोशिश करना  
(d) अधिक परिश्रम का थोड़ा फल मिलना

54. 'आँख के अन्धे नाम नयनसुख' का सही अर्थ है

(UPSDI 2006)

- (a) गुणों के विरुद्ध नाम का होना  
(b) बुद्धिहीन किन्तु पर्याप्त धनवान  
(c) अन्धा आदमी प्रायः गुणवान होता है  
(d) एक आँख के अन्धे को भी सभी सुखद अनुभव हो सकते हैं

55. 'कोयले की दलाली में हाथ काले' का अर्थ है

(HTET 2013)

- (a) कोयले का व्यापार मत करो  
(b) कोयले की दलाली में हाथ गंदे हो जाते हैं  
(c) दलाली नहीं करनी  
(d) खराब काम का परिणाम भी खराब ही होता है

56. 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'

(UPPGT 2000)

- (a) कवि बहुत तर्कशील होते हैं (b) कवि बहुत भावप्रवण होते हैं  
(c) कवि बहुत विचारशील होते हैं (d) कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं

57. 'बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा' का अर्थ है

(UP राजस्व निरीक्षक परीक्षा 2014)

- (a) दूसरों का दुःख-दर्द नहीं समझना  
(b) सहानुभूति नहीं दिखाना  
(c) सन्तानहीन होना  
(d) जिस पर बीतती है, वहीं जानता है

58. 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' का अर्थ है

(UP राजस्व निरीक्षक परीक्षा 2014)

- (a) एक चना किसी काम का नहीं  
(b) एक चना शक्तिहीन होता है  
(c) अकेला व्यक्ति शक्तिशाली नहीं होता  
(d) एक चने से भूख नहीं मिटती



- 59.** हथेली पर सरसों नहीं जमती का अर्थ है (रेलवे 2010, 04)  
 (a) सरसों के लिए जमीन चाहिए, हथेली नहीं  
 (b) हर काम में मनमानी नहीं चल सकती  
 (c) काम के लिए समय चाहिए, जब चाहो तभी काम नहीं हो सकता  
 (d) सफलता समय पर आती है
- 60.** गए थे रोज़ा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी का अर्थ है (रेलवे 2000)  
 (a) मुश्किल में पड़ जाना  
 (b) कष्ट पहुँचाना  
 (c) गरीब हो जाना  
 (d) उपकार करने के बदले स्वयं को दुःख भोगना पड़ा
- 61.** गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास का अर्थ है (रेलवे 2000)  
 (a) अपने-अपने घर जाना  
 (b) अपना-अपना काम करना  
 (c) किसी की नहीं सुनना  
 (d) जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता
- 62.** सिर सहलाए भेजा खाए का अर्थ है  
 (a) एकदम निकट आकर शोरगुल करना  
 (b) किसी के सिर पर सवार हो जाना  
 (c) दोस्त बनकर हानि पहुँचाना  
 (d) चापलूसों के कहने को करना
- 63.** सौ सयाने एक मत का अर्थ है (बैंक परीक्षा 2002)  
 (a) कुछ भी निश्चय न कर पाना  
 (b) ज्यादा चालाक बनना  
 (c) अच्छे विचारों में भिन्नता होना  
 (d) बुद्धिमानों के विचार एक-से होते हैं
- 64.** तन पर नहीं लत्ता पान खाए अलबत्ता का अर्थ है (बैंक परीक्षा 2002, 10)  
 (a) बहुत गरीब होना  
 (b) झूठा दिखावा करना  
 (c) एक साथ दो लाभ होना  
 (d) बुरी आदत का शिकार
- 65.** गुरु गुड़ चेला चीनी का अर्थ है (बैंक परीक्षा 2002)  
 (a) गुरु हमेशा सर्वोपरि होता है  
 (b) गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना  
 (c) चेले द्वारा महान कार्य करना  
 (d) गुरु के कथानुसार कार्य करना
- 66.** तबेली की बला बन्दर के सिर का अर्थ है  
 (a) किसी की शिकायत दूसरों से करना  
 (b) एक-दूसरे से लड़वाना  
 (c) किसी का अपराध दूसरे के सिर  
 (d) अपना दोष दूसरों के सिर मढ़ना
- 67.** फिसल पड़े तो हर गंगे का अर्थ है (सब इंस्पेक्टर परीक्षा 2002)  
 (a) मज़बूरी में काम पड़ना  
 (b) नुकसान उठाना  
 (c) एक साथ दो काम करना  
 (d) विपत्ति पड़ने पर ईश्वर का स्मरण करना
- 68.** अन्धा पावै आँखें तो पतियाय का अर्थ है (रेलवे 2001)  
 (a) सबसे मूल्यवान वस्तु प्राप्त करके प्रसन्न होना  
 (b) अभीष्ट की प्राप्ति होने पर विश्वास का जमना  
 (c) असम्भव की चाह होना  
 (d) असम्भव को सम्भव कर दिखाना
- 69.** उधो का लेना न माधो को देना का अर्थ है (UP निर्वाचन आयोग परीक्षा 2001)  
 (a) अपने काम से काम  
 (b) भक्ति भाव से दूर रहना  
 (c) हिसाब साफ रखना  
 (d) सबसे अलग रहना
- 70.** कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली का अर्थ है (रेलवे 2000)  
 (a) ऊटपटांग बात करना  
 (b) राजा और सामान्य व्यक्ति की तुलना  
 (c) राजा भोज और गंगू तेली के बीच तुलना करने का प्रयास  
 (d) आकाश-पाताल का अन्तर होना
- 71.** आप डूबे तो जग डूबा का अर्थ है (PCS 2003)  
 (a) बुरा आदमी सबको बुरा कहता है  
 (b) मरने के बाद कौन देखने आता है कि क्या हुआ  
 (c) अपनी हानि होने पर दूसरों को भी हानि पहुँचाना  
 (d) सबको अपने समान समझना
- 72.** तेल देखो तेल की धार देखो का अर्थ है (PCS 2003)  
 (a) लापरवाही से नुकसान होता है  
 (b) तेल की धार देखकर तेल का परीक्षण करना  
 (c) काम करते समय उसकी पहचान करना  
 (d) रुख पहचानना
- 73.** ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर का अर्थ है (अनुवादक परीक्षा 2005)  
 (a) मूर्ख के साथ मित्रता करने पर हानि ही होती है  
 (b) मुसीबतों से घबराना किसी भी प्रकार से उचित नहीं  
 (c) ओछे व्यक्ति किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते  
 (d) कठिन काम शुरू करने पर कष्ट तो सहन करने ही पड़ते हैं
- 74.** उपाय वही सफल और श्रेष्ठ है जिसका लोहा विरोधी को भी मानना पड़े के लिए सही लोकोक्ति है  
 (a) आधा तीतर आधा बटेर  
 (b) चमत्कार को नमस्कार  
 (c) जादू वही जो सिर चढ़कर बोले  
 (d) इनमें से कोई नहीं
- 75.** कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है, का अर्थ है  
 (a) अपनी ही प्रशंसा करना  
 (b) अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है  
 (c) किसी को बोलने नहीं देना  
 (d) दूसरों की वस्तु को तुच्छ समझना
- 76.** घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध का अर्थ है  
 (a) घर के ज्ञानी को सम्मान नहीं  
 (b) घर-घर में मिट्टी के चूल्हे  
 (c) घर की मुर्गी दाल बराबर  
 (d) घर का भेदी लंका ढाहे
- 77.** टूट चाप नहिं जुरै रिसाने का अर्थ है  
 (a) टूटा धनुष क्रोध करने से नहीं जुड़ता  
 (b) चिन्ता छोड़ो सुख से जिओ  
 (c) नुकसान के लिए परेशान नहीं होना चाहिए  
 (d) नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है
- 78.** पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े का अर्थ है  
 (a) पुचकारने पर कुत्ता भी प्यार दिखाता है  
 (b) ओछे लोग मुँह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं  
 (c) ओछे लोग ही इस जमाने में तरक्की कर सकते हैं  
 (d) नगण्य व्यक्ति को कभी अपमानित नहीं करना चाहिए
- 79.** तीन दिन मेहमान चौथे दिन हैवान का अर्थ है  
 (a) आतिथ्य थोड़े दिन का ही अच्छा होता है  
 (b) अतिथि का कभी अनादर नहीं करना चाहिए  
 (c) मेहमान भी कभी-कभी शैतान बन जाते हैं  
 (d) ससुराल में दामाद को अधिक दिन नहीं रहना चाहिए

- 80.** जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजे का अर्थ है  
(a) समय का रुख देखकर काम करना चाहिए  
(b) राजनीति में दल-बदल करते रहना चाहिए  
(c) ऐसा काम करना चाहिए जिससे संकट में न फँसा जाए  
(d) पवन की तरह कभी शीत और कभी उष्ण होना चाहिए
- 81.** चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते का अर्थ है  
(UPSSSC वनरक्षक परीक्षा 2015)  
(a) कंजूसी करना (b) सीमित साधनों से काम चलाना  
(c) छोटा होकर बड़ा काम करना (d) सीमित साधनों से बड़े काम नहीं होते
- 82.** अंधे के हाथ बटेर लगना का अर्थ है (UPSSSC वनरक्षक परीक्षा 2015)  
(a) अंधा भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है  
(b) अंधेरे में कोई वस्तु मिल जाना  
(c) अपात्र को बड़ी सफलता मिलना  
(d) मुसीबत पर मुसीबत आना
- 83.** 'खग जाने खग की भाषा' लोकोक्ति का उचित अर्थ, नीचे दिए विकल्पों में से बताइए (UPSSSC VDO 2015)  
(a) पक्षियों की तरह बोलना  
(b) पक्षियों की भाषा न जानना  
(c) पक्षी अपनी भाषा स्वयं समझते हैं  
(d) समान प्रवृत्ति वाले लोग एक-दूसरे को सराहते हैं
- 84.** नीचे लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ दिए गए हैं। इनमें गलत अर्थ वाली लोकोक्ति का चयन कीजिए। (UPSSSC VDO 2016)  
(a) आगे नाथ न पीछे पगहा — बन्धनहीन  
(b) तीन तेरह होना — संगठित होना  
(c) एक टकसाल के ढले हैं — सब एक जैसे हैं  
(d) आँख के अन्धे गाँठ के पूरे — मूर्ख लेकिन धनवान
- 85.** 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' लोकोक्ति का सही अर्थ है (UPSSSC युवा कल्याण अधिकारी 2018)  
(a) होनहार बालक सुंदर होता है।  
(b) सुंदर बालक होनहार होता है।  
(c) होनहार बालक के गुण बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं।  
(d) होनहार बालक सुंदर नहीं होता है।
- 86.** 'एक से बढ़कर दूसरे' का अर्थ व्यक्त करने के लिए सही लोकोक्ति है (UPSSSC युवा कल्याण अधिकारी 2018)  
(a) समरथ को नहीं दोष गोसाईं  
(b) सेर को सवा सेर  
(c) सझ्या भये कोतवाल अब डर काहे का  
(d) सखी न सहेली, भली अकेली
- 87.** 'लाभ ही लाभ' अर्थ के लिए सही लोकोक्ति है (UPSSSC VDO/समाज कल्याण पर्यवेक्षक 2018)  
(a) पाँचों उँगलियाँ घी में  
(b) पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती  
(c) नेकी कर और कुँ में डाल  
(d) नेकी और पूछ-पूछ
- 88.** निम्नलिखित में से कौन-सी कहावत का अर्थ है—'कहीं ठिकाना न होना'? (UP बी. एड. 2019)  
(a) दोनों नावों पर पैर रखना (b) न सावन हरा न भादो सूखा  
(c) न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी (d) इनमें से कोई नहीं
- 89.** उस विकल्प का चयन करें जो दी गई लोकोक्ति का सही अर्थ है।  
आँख का अंधा गाँठ का पूरा (UP मंडी परिषद् 2018)  
(a) अच्छा व्यक्ति (b) मूर्ख धनी  
(c) सोच समझकर करना (d) कठोर व्यक्ति
- 90.** आग लगने पर कुआँ खोदना — लोकोक्ति का सही अर्थ होगा (UPSSSC VDO/समाज कल्याण पर्यवेक्षक 2018)  
(a) जल्दी से कार्य करना  
(b) संकट के समय बचाव के लिए सोचना  
(c) मुसीबत आने से घबरा जाना  
(d) कुआँ खोदकर पुण्य कमाना
- 91.** 'चिराग तले अँधेरा' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)  
(a) अपने आसपास की परवाह न करना  
(b) जहाँ जरूरी हो वहीं उजाला करना  
(c) दूसरे लोगों का ध्यान रखना  
(d) निकट के दोष को न देख पाना
- 92.** 'आसमान से गिरा खजूर पर अटका' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)  
(a) बाधा-मुक्त होना  
(b) एक नई मुसीबत में पड़ना  
(c) मुसीबत ही मुसीबत  
(d) मुसीबत में किसी का सहारा मिलना
- 93.** 'नेकी कर दरिया में डाल' लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)  
(a) मदद करके मदद की उम्मीद करना  
(b) उपकार करके उपकार की बात को भूल जाना  
(c) घृणा के बदले प्रेम करना  
(d) कष्ट सहकर परोपकार करना

## उत्तरमाला

1. (a)	2. (c)	3. (b)	4. (d)	5. (c)	6. (d)	7. (c)	8. (c)	9. (d)	10. (d)
11. (b)	12. (a)	13. (d)	14. (c)	15. (d)	16. (b)	17. (d)	18. (c)	19. (c)	20. (d)
21. (a)	22. (a)	23. (d)	24. (b)	25. (d)	26. (b)	27. (d)	28. (c)	29. (c)	30. (b)
31. (d)	32. (c)	33. (b)	34. (d)	35. (b)	36. (d)	37. (c)	38. (c)	39. (d)	40. (b)
41. (a)	42. (c)	43. (c)	44. (a)	45. (d)	46. (b)	47. (a)	48. (c)	49. (d)	50. (c)
51. (d)	52. (a)	53. (b)	54. (a)	55. (d)	56. (d)	57. (d)	58. (c)	59. (c)	60. (d)
61. (d)	62. (c)	63. (d)	64. (b)	65. (b)	66. (c)	67. (a)	68. (b)	69. (a)	70. (d)
71. (a)	72. (d)	73. (d)	74. (c)	75. (b)	76. (a)	77. (d)	78. (b)	79. (a)	80. (a)
81. (d)	82. (c)	83. (d)	84. (b)	85. (c)	86. (b)	87. (a)	88. (d)	89. (b)	90. (b)
91. (d)	92. (b)	93. (b)							